□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□

Dr. Kusum[1]

सारांश

हिंदी साहित्याकाश में कबीर एक चमकता हुआ सितारा हैं जो आजतक भी धूमिल नही हुआ है। समय के थपेड़े भी उसकी चमक को कम करने में असमर्थ हैं । क्रन्तिकारी कबीर युग दृष्टा और युग निर्माता के साथ-साथ यथार्थ में पुरुषार्थ के कवि हैं । उन्होंने अपनी समकालीन सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक परिस्थितियों को अपनी मानस दृष्टि से देखा और परखा और उसके पश्चात मानव मात्र के कल्याण के लिए तत्कालीन अंधविश्वासों और रुढियों पर सीधे चोट की । अज्ञान रूपी अंधकार से बाहर निकलने का मार्ग प्रशस्त किया । समाज द्वारा बनाये गये रीति रिवाजो का प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर सीधे पड़ता है समय कोई भी रहा हो मनुष्य उस से अछूता नही रहा उसी प्रकार कबीर के जीवन पर भी उस समय की सामाजिक परिस्थितियों ने सीधा प्रहार किया मगर वे हारे या डरे नही बल्कि उनका डट कर सामना किया । यही वह काल होता है जो व्यक्ति को कालजयी बना देता है । उनके जीवन को पूर्व से पश्चात तक जिन-जिन परिस्थितियों ने प्रभावित किया । इस शोधपत्र के द्वारा उनकी हल्की सी झलक ही प्रस्तुत की जा रही है ।

@CGTA

संत कबीर के पूर्व की सामाजिक परिस्थिति:

उस समय पर सामाजिक परिस्थितियां अत्यधिक विषम थी भारत में सभी धर्मों के लोग रहते थे लेकिन तत्कालीन समाज में हिन्दू और इस्लाम धर्म प्रतिद्वन्दी धर्म थे । आक्रमणकारियों के रूप में मुसलमानों ने भारत में प्रवेश किया और शक्ति को धर्म प्रचार का प्रमुख आधार बनाया जिससे हिन्दू धर्म पर संकट के बादल मंडराने लगे । हेनरी इलियट की पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया' के प्रथम भाग के उद्धहरणों में मुसलमानों से संघर्ष करने वाले हिन्दुओं की हत्याओं, हिन्दुओं के धार्मिक जुलूसों, पूजा और धर्म कृत्यों के आम प्रतिबंधों के साथ-साथ कुछ असहिष्णुता पूर्ण कार्यों में- मूर्तियों का भंजन, मन्दिरों का विनाश, बलात धर्म परिवर्तन और हिन्दू स्त्रियों से मुसलमानों द्वारा दुराचार, बलात हिन्दुओं का देश निकला और उनकी सम्पत्ति का अपहरण, उनकी हत्याएं और कत्लेआम का आदेश देने वाले कामुक, शराबी और अत्याचारी मुस्लिमों का उल्लेख है ।1 तत्कालीन समाज में साथ, सहयोग, सहानुभूति, सौहार्द्रता की भावना दम तोड़ रही थी ऐसी विषम परिस्थितियों में ही संत कबीर का आविर्भाव हुआ ।

[1] Associate Professor in Hindi, Govt. College of Education, Sector-20 D, Chandigarh

कबीर के जन्म की तत्कालीन परिस्थितियाँ:-

कबीर का प्रादुर्भाव एक ऐसे युग-संधि के समय हुआ था जब धर्म-साधनाओं, राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और मानवीय मनोभावनाओं में विविधता का रंग चढ़ चूका था I सामाजिक वर्गों के बीच पारस्परिक एकता और सौहार्दता के तार चरमरा रहे थे I समाज सभी प्रकार की हलचलों का सामना कर रहा थाI कबीर के जीवन के विषय में ऐतिहासिक तथ्यों में एकरूपता नही है I उनके जन्म के सम्बन्ध में यह दोहा प्रसिद्ध है-

चौदह सौ पचपन साल गए, चंद्रवार एक ठाठ ठए I
जेठ सुदी बरसायत को, पूरनमासी तिथि प्रगट भए II

कबीरदास एक ऐसे व्यक्ति, संत, कवि, सुधारक थे जिन्होंने कागद मसि को छुए बिना ही ऐसे काव्य का सृजन किया जिसने करोड़ों-करोड़ों हृदयों के तारों को झंकृत किया I

कबीर के सृजन का आविर्भाव:-

निर्भीक, स्पष्टवादी और विनीत कबीर को रुढ़िवादी परम्पराओं, पाखण्ड, अहंकार, अनाचार और भेदभाव से उनका मानो जन्मजात बैर था I यही कारण था कि वे कठिन से कठिन परिस्थितियों के आगे कभी नही झुके बल्कि उन्होंने नवीन और लोक कल्याणकारी कार्यों को ही अपने जीवन का धय बना लिया I क्रान्तिदर्शी कबीर के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने लिखा हैं- " वे सिर से पैर तक मस्तमौला, स्वभाव से फक्कड़, आदत से अक्खड़, भक्त के सामने निरीह, वेशधारी के आगे प्रचंड, दिल के साफ, दिमाग के दुरुस्त, भीतर से कोमल, बहार से कठोर, युगावतार की शक्ति और विश्वास लेकर वे पैदा हुए थे और युग प्रवर्तक की दृढ़ता उनमें विद्यमान थी I इसलिए वे युग प्रवर्तन कर सके I"2 जैसा कि कबीरदास जी के विषय में कहा जाता है कि वे पढ़े-लिखे नही थे मगर उन्होंने अनेक संत-महात्माओं के विचारो को आत्मसात किया और जो अनुभव की कसौटी पर खरा उतरा उसी को कहा I समाज में घटित होने वाली स्थितियों और परिस्थितियों पर कुठाराघात किया I उनका लेखन कपोल-कल्पित भावनाओं पर नही बल्कि कंकरीली, पथरीली, वास्तविक, यथार्थ पर आधारित है I

यथार्थ दृष्टा यथार्थ सृष्टा:-

कबीर ने धर्म के नाम पर जिस प्रकार की समाज में विषमतायें व्याप्त थीं उनके विरुद्ध तीखा विरोध किया और समाज को उन समस्त कुरीतियों से मुक्त करने के लिए अपने काव्य

©CGCTA

को माध्यम बनाया और पूजा, व्रत, तीर्थ, नवाज, हज का सहारा लेकर जो पाखण्ड फैला रहे थे उनसे सतर्क रहने के लिए लोगों को जागरूक किया I उन्होंने एक अल्लाह, निरंजन के प्रति लगन को ही अपना लक्ष्य बनाया I इस लगन को ही साधन माना अन्य कोई मध्यवर्ती साधन को स्वीकार नही किया I प्रेम ही साधन है और प्रेम ही साध्य है I यथार्थ दृष्टा और यथार्थ सृष्टा के साक्षात दर्शन इन कुछ पंक्तियों के द्वारा किये जा सकते हैं –

एक निरंजन अल्लाह मेरा I हिन्दू तारुक दुहूँ नही मेरा I
राखूँ व्रत न मरहम जरा I तिशी सुमिरुं जो रहे निदान II
न हज जाऊं न तीरथ पूजा, एक पिछान्या तौकर दूजा I
कहे कबीर भरम सब भागा, एक निरंजन सूं मन लागा II
जाके मुख माथा नहीं, नहीं रूप कुरूप I
पुहुप वासते पातरा ऐसा तत्व अनूप II
कैसो राम –रहीम करीमा, कैसो –अल्लाह रामसति सोई I
बिस्मिल मेटी विसम्भर एकै, और न दूजा कोई II
एक जोति से सब जग उतपा को बामन को सूदा I
जाति –पाति पूछे नहीं कोई हरि को भजे सो हरि का होई I3

सामाजिक कुरीतियों, आडम्बरों, रूढ़ियों, परम्पराओं, अंधविश्वासों का कबीर के द्वारा उद्छेदन:-

तत्कालीन समाज में धर्म भेद, जाति भेद के कारण अत्यधिक अव्यवस्था फैली हुई थी उसको समाप्त करने के लिए उन्होंने कहा कि "साईं के सब जीव हैं I कीरी कुंजर दोयI" वस्तुतः सभी के अन्दर उस परम ज्योति का आभास दिखाई देता है I ऊँच-नीच, छुआछुत, कुरीतियों, रुढियों, परम्पराओं और अंधविश्वासों का बहिष्कार करने पर कबीर ने बहुत जोर दिया और उनकी फटकार और ललकार के दर्शन इन पंक्तियों में साफ-साफ परिलक्षित होते हैं I

पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहाड I
जासे तो चाकी भली, पीस खाए संसार II
जप तप दिसे थोथरा, तीरथ ब्रत बेसास I
सूबे सेवंल सेविया, यो जग चल्या निरास I

मुसलमानों के दम्भ और हिंसापूर्ण कृत्यों की कड़े शब्दों में आलोचना करते हुए कहा कि-

दिन को रोजा रखत है, रात हनन है गाय I
यह तो खून वह बन्दगी वैसे ख़ुशी खुदाय II
कंकड़ पत्थर जोड़कर मस्जिद लई बनाए I
तापर मुल्ला बांग दे क्या बहरा भया खुदाए II

सामाजिक विरोधों का साहसपूर्ण ढंग से सामना:-

समाज के द्वारा किए जा रहे विरोधों का कबीर ने साहस के साथ सामना किया और वे कभी भी उन विरोधो से घबराए नही बल्कि उन विरोधो का तर्क संगत उत्तर दिया I वे चाहे धर्म से जुड़े हों या जाति से, ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा किसी भी प्रकार के असंगत, अमानवीय और अपमानजनक ही क्यों न रहे हों उनका उन्होंने विवेक के साथ समाज के समक्ष उनका सटीक पक्ष रखा I हिन्दू हों या मुसलमान दोनोंके भ्रम को दूर करने के लिए कहा I उन्हें हिन्दू -मुसलमानों के बीच का अन्तर बिल्कुल पसन्द नहीं था और वे दोनों को एक करना चाहते थे I उनके अनुसार ऊँचे कुल में जन्म लेने से कोई महान या पण्डित नही हो जाता I महान बनने के लिए महान आत्मिक शुद्ध विचार और अच्छे कार्य करने चाहिए जिससे मानवता की सेवा हो सके I

भुला भरमि परे जिनी कोई I
हिन्दू तुरुक झूठ कुल सोई II
जे तू बाभन बभनीं जाया I
तौ आन्र बाट होई काहे न आया II
जे तू तुरक तुरकनी जाया I
तो भीतरी खतना क्यों न कराया II

लोगों की मानसिक स्थिति को व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि-

कबीर घास न निंदिये जो पांव तलि होई I
उडी पड़े जब आँख में खरा दुहेला होई II
बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर I
पंछी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर II

सृजन में तर्क विवेक और विज्ञान का समावेश:-

कबीर ने अपने सृजन के द्वारा अतार्किक, अविवेकी और अवैज्ञानिक रुढियों और परम्पराओं का खण्डन किया और लोगों को समझाते हुए कहा कि अगर पत्थर को पूजने से समस्याओं

@CGCTA

का समाधान सम्भव हो जाता तब जो संसार में अनेकानेक विपत्तियों से घिरा जनमानस है वह सरलता से उन सब से मुक्ति पा सकता था I यह इतना सरल नही इसके लिए घिसना पड़ता है अपने आपसे आप लड़ना पड़ता है संघर्ष करना पड़ता है तब कहीं जा कर चन्दन की खुश्बू से घर-आगंन सुगन्धित होता है I

लोग ऐसे बाबरे, पाहन पूजन जायं I
घर की चकिया काहे न पूजे, जेहि का पीसा खायं II
फूटी आँख विवेक की, लखै न संत-असंत I
जेक संग दस बीस हैं, ताको नाम महंत II
चलती चक्की देखि कै, दिया कबिरा रोय I
दुई पट भीतर आई कै, साबित गया न कोय II
वैष्णव भया तो क्या भया बूझा नहीं विवेकI
छाया तिलक बनाय कर दराधिया लोक अनेक II

लोक उपकार एवं लोक कल्याण की भावना से ओतप्रोत साहित्य का सृजन:-

जनसाधारण की विचारधारा में आमूल परिवर्तन के लिए कबीर ने साहित्य को लोक उपकार, लोक कल्याण और नीति परक विचारों को प्रचार-प्रसार का साधन बनाया I जिससे वे लोगों के टूटते आत्म विश्वास को जोड़ने का कार्य क्र सकें I "कबीर साहब यथार्थ में पुरुषार्थ के कवि हैं I उन्होंने भारतीय जनता में खोया हुआ आत्म विश्वास लाने की कोशिश की I"4 सुखी जीवन यापन के लिए छल कपट को छोड़ कर दया,प्रेम, सहानुभूति युक्त जीवन यापन करना चाहिए I मन के निर्मल होने पर ही शान्ति को पाया जा सकता है I

कबिरा मन निर्मल भया, जैसे गंगा नीर I
अब पाछे-पाछे हरि फिरै, कहत कबीर कबीर II

"संत कबीर के मत से प्रत्येक प्राणी का जीवन लक्ष्य प्रभु प्राप्ति होना चाहिए और जब तक ईश्वर का साक्षात्कार न हो जाए तब तक कहीं भी रुकना नहीं चाहिए क्योंकि उनके मत से प्रभु ही चिन्ता मणि हैं जिसकी प्राप्ति के पश्चात समग्र चिन्ता समाप्त हो जाती है I अत: उन्हीं को मन में प्रथम स्थान देना चाहिए I"5

यह सत्य है कि इस मार्ग पर चलना सरल नही है मगर जिसने भी इस मार्ग पर एक कदम रख दिया इसका स्वाद चख लिया फिर उसको कोई अन्य स्वाद नही भाता I

यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहि I
सीस उतारे भुई धरे, तब पैठे घर मांहि II

जाति के नाम पर होने वाली धोका धड़ी पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने कहा कि-

जाति न पूछो साधू की, पूछ लीजिए ज्ञान I
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान II

कबीर ने सभी के सुख की कामना की है वे किसी से भी किसी भी प्रकार का द्वेष नही रखते और यही वे प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा देते हैं I

कबिरा खड़ा बाजार में मांगे सबकी ख़ैर I
न कहू से दोस्ती ना काहू से बैर II

हर प्रकार के झगड़े का कारण एक मात्र अज्ञान है अगर व्यक्ति समझ जाये की न कोई छोटा है और न कोई बड़ा है वह चाहे किसी भी धर्म का हो या किसी भी जाति का हो न कोई बुरा है न कोई अच्छा सभी प्राणी प्रकृति से सृजित हैं I

हिन्दू कहे मोहि राम पियारा, तुरक कहै रहमाना I
आपस में दोउ लरि मुए, मरम न कहू जाना II
अव्वल अलह नूर उपाया, कुदरत के सब बन्दे I
एक नूर ते सब जग उपज्या, कौन भले कौन मन्दे II

"कबीर सच्चे मानवतावादी थे I जिनका एक मात्र लक्ष्य मानव मात्र के कल्याण की साधना था I वे उसी ज्ञान को स्तुत्य मानते के पक्ष धर थे, जिस से मानव की पीड़ा का शमन होता हो I"6 उनका विरोध समाज में व्याप्त दुर्गुणों से था और वे उनसे समाज को मुक्त करना चाहते थे I आदर्श समाज की रचना के लिए आदर्श मनुष्य का होना अत्यावश्यक है I

तत्कालीन समाज सुधारकों में कबीर का स्थान:-

उस समय के समाज सुधारको में प्रमुख समाज सुधारक नामदेव, कबीरदास, संत कमाल, धन्ना भगत, गुरु नानक देव, दादू दयाल, मलूकदास गरीबदास, चरनदास आदि जिन्होंने समाज की वास्तविक स्थिति को सुधारने का भरसक प्रयास कियाI "हिन्दू -मुस्लिम साम्प्रदायिकता के विरोध में आवाज उठाने वाले कबीर पहले संत, सुधारक, विचारक, कवि ही हैं I रूढ़ धार्मिक शास्त्रों, पूजा उपासना सम्बन्धी जड़ताओं, मन्दिर-मस्जिद विषय, अंध आस्थाओं,

जाति –वर्ण सम्बन्धी विभेदों और तमाम तरह के भारतीय जीवन के अंतरविरोधों को उन्होंने निर्भयता के साथ अस्वीकार के दिया I"7

किसी भी कालजयी रचनाकार की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है कि वह अपने वर्तमान के साथ –साथ भविष्य को भी प्रभावित करे I आज वर्षो बाद भी कबीर की महत्ता बरकरार है और जब तक सामाजिक और धार्मिक संघर्षों से व्यक्ति जूझता रहेगा उनका काव्य मनुष्य का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा I क्योंकि उन्होंने कविता के लिए कविता की रचना नही की जब कि उनकी विचारधारा सत्य की खोज में प्रवाहित हुई है I "कबीर हिन्दुओं के लिए वैष्णव भक्त, मुसलमानों के लिए पीर, सिक्खों के लिए भगत, कबीर पंथियों के लिए अवतार, आधुनिक राष्ट्रवादियों के लिए हिन्दू मुस्लिम एक्य, नव वेदान्त वादियों के लिए विश्वधर्म एवं मानव धर्म के प्रवर्तक, प्रगतिशील तत्वों की दृष्टि से कमजोर वर्ग के पक्ष धर, बन्धुत्व भावना, न्याय तथा एकता के प्रतिपादक के रूप में मानी हैं I उपरोक्त तत्वों के आधार पर कहा जा सकता है कि संत कबीरदास जी का व्यक्तित्व संकीर्ण धार्मिक बन्धनों से इतना परे था कि वे हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों ही सम्प्रदायों के लोगों का आदर प्राप्त कर सके I अस्तु कहा जा सकता है कि कबीर जैसे महापुरुष का जीवन उस हीरे के समान है जिसके कई पहलू होते हैं और इनका हर पहलू अपने में सम्पूर्ण, सुन्दर तथा ज्योतिर्मय है I"8

निष्कर्ष:-

कबीर ने नीर-क्षीर विवेकी बनकर धार्मिक, सामाजिक और साहित्यिक क्षेत्र में क्रान्ति का बिगुल बजा दिया और सत्यान्वेषण और सत्यानुशीलन का मार्ग अपना कर जनहित की भावना का प्रचार-प्रसार किया I वे समस्त बाह्यचारों के जंजालों और संस्कारो को विध्वंस करने वाले क्रान्ति कारी थे I समझोता उनका रास्ता नही था I कमजोर स्नायु का आदमी बनना बर्दाश्त नही कर सकते I अत: उन्होंने अनुभव किया कि जाति गत, कुलगत, धर्म गत संस्कारगत, विश्वासगत, शास्त्रागत, सम्प्रदायगत बहुतेरी विशेषताओं के बल को छिन्न करके ही वह आसन तैयार किया जा सकता है I जहाँ एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की हैसियत से मिले I जब तक यह नही होता तब तक अशांति रहेगी, मारामारी रहेगी, हिंसा प्रतिस्पर्धा रहेगी I"9

अनुभूति पर उतरे हुए ज्ञान का ही सार है बाकी सब असार है जो ज्ञान मनुष्य की आंतरिक आंखे खोल दे उस ही ज्ञान का महत्व जीवन में है अन्यथा सब कागज पर पड़ी स्याही के

@CGCTA

समान है I जब इसके सारपूर्ण रहस्य को मनुष्य समझ जाता है तब अन्तर की सारी खाई समाप्त हो जाती है और दोनों का दूध और पानी की तरह गहन मिलन हो जाता है I

लिखा पढ़ी की है नहीं, देखा देखी बात I

दूल्हा-दुलहिन मिल गए, फीकी पड़ीं बारात II

इसलिए कबीर बार-बार समझाते हुए कहते हैं कि कोई भी बात जो व्यवहार संगत न रह कर एक मात्र ग्रन्थों में सिमटकर रह गयी है ऐसे विचार को नकार कर स्वयम परीक्षण कर उसके साक्ष्य को स्वीकार कर उसे प्रमाण मानकर ही यह उद्घोष किया कि-

तू कहता कागद की लेखी मैं कहता आँखिन की देखी

मैं कहता सुलाझावनहारी

तू राख्यो उरझाई रे मेरा तेरा मनवा कैसे इक होई रे I

सन्दर्भ सूची

1. मध्य कालीन भारत (1750 - 1550) सं0 हरिशचन्द्र वर्मा, पृ ० 374

2. कबीर ग्रन्थावली -डॉ. हजारीप्रसाद दव्वेदी, पृ ० 338

3. कबीर की काव्य कला - डॉ। मुरारी लाल शर्मा 'सुरस' पृ ० 26

4. विवेक दास, कबीर - साहित्य की प्रसंगिकता ,पृ ० 84

5. डॉ। प्रताप सिंह चौहान, कबीर साधना और साहित्य पृ ० 36

6. डॉ. त्रिभुवन सिंह, कबीर साहित्य की प्रासंगिकता, पृ ०141

7. डॉ. शुक देव सिंह, कबीर साहित्य की प्रासंगिकता, पृ ० 01

8. कबीर के काव्य में प्रतीत -विधान, डॉ. रत्नेश कुमार सिंह, अप्रकाशित शोध -प्रबंध , पृ ० 38

9. कबीर- सम्पादक -विजयेंद्र स्नातक, पृ० 128

10. कबीर - ग्रन्थावली, डॉ हजारी प्रसाद दववेदी।

11.कबीर ग्रन्थावली, श्याम सुन्दरदास।

@CGCTA